International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2017; Page No. 23-24

समाज में साहित्य की भूमिका (भक्तिकाल के सन्दर्भ में)

अनुज कुमार रावत
Desh Bandhu College, University of Delhi, South Moti Bagh, New Delhi, India

प्रस्तावना

एक निश्चित भू भाग में रहने वाले जन समूह को समाज कहा जाता है। जिसकी अपनी परम्पराएं, रीति रिवाज, एवम् संस्कृति होती है। प्रत्येक समाज का साहित्य उसकी समकालीन परिस्थितियों और प्रवृत्तियों से प्रभावित होता है जो जाति जिस समय जिस भाव से परिपूर्ण या लुप्त होती है। वे सब उसके भाव उस समय के साहित्य की समालोचना से अच्छी तरह प्रकट हो सकते हैं। जिस तरह से साहित्य अपने समाज की समकालीन परिस्थितियों से प्रभावित होता है। उसी तरह कोई भी साहित्यकार अपने समाज से निरपेक्ष नहीं होता महान साहित्यकार अपने समाज की उपज होता है, और युगीन जीवन से प्रभावित होता है और उसे प्रभावित भी करता है।

नार्वे के प्रसिद्ध नाटककार इब्सन शॉ (1828–1906) ने कहा था कि "कवि का काम अपने समय और अपनी जाति को उद्वेलित करने वाले सामाजिक एवं शाश्वत प्रश्नों को स्वयं समझना और दूसरों को समझाना है।" लेखक का जन्म ही इसलिए होता है, कि वह इस असार जगत से सार को स्वयं देखे और दूसरों को दिखलावे।

साहित्य हमारी संकीर्ण मनोवृत्ति का परिष्कार करता है। वह इसलिए भी जरूरी है कि हम जड़ मानवीय संस्कारों से मुक्त हो सकें। और जिसके फलस्वरूप एक बेहतर समाज का निर्माण हो सके। सार्थक साहित्य वही है जो, अपनी भूमिका अच्छी तरह से निभाये। साहित्य का कार्य केवल अतीत के गौरव का वर्णन, प्रेम का वर्णन, नायक नायिकाओं के सौन्दर्य का वर्णन करना नहीं है, अपितु साहित्य की सार्थकता उसी में है, जो समाज के सबसे नीचे के पायदान पर खड़े मनुष्य के जीवन के प्रति संवेदनशील बनाऐं।

अमृत राय ने आधुनिक भाव बोध को संज्ञा पुस्तक में लिखा है कि "साहित्य की वास्तविकता सार्थकता इसमें है कि वह अनजाने ही आदमी की प्रवृत्तियों का संस्कार करता है, और जो साहित्य जितना ही श्रेष्ठ होता है। वह उतने ही ज्यादा अनजाने ढंग से अपना कार्य करता है।" इस तरह हम कह सकते हैं कि साहित्य मनुष्य को संस्कारित करने में अपनी अहम भूमिका निभाता है।

साहित्य का बड़ा महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि जो दलित है, पीड़ित है, वंचित है–चाहे वह व्यक्ति हो या समूह, उसकी हिमायत और वकालत करे। समाज उसकी अदालत है। तब समाज अच्छे–बुरे का निर्णय करेगा। क्या अच्छा है और क्या बुरा है इसका फैसला साहित्यकार समाज की तरफ से सुनना चाहता है। प्रेमचन्द ने 'साहित्य का उद्देश्य' निबंध में लिखा है कि "हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करें।"

उपरोक्त परिभाषा के आधार पर हम कह सकते हैं कि समाज के बिना साहित्य अस्तित्वहीन है। जब हम भक्तिकालीन साहित्य का अध्ययन करते हैं तो हम तत्कालीन समाज की झलक उसमें देख सकते हैं। यह साहित्य हमें तत्कालीन जीवन से परिचित करवाता है। उस समय जो परम्पराएं, रूढ़ियां, जड़ मनोवृत्ति थी उन्हें तोड़ने के लिए कबीर, तुलसी, मीरा व अन्य भक्त कवियों ने साहित्यिक प्रयास किया है।

भक्तिकाल से पूर्व आदिकालीन साहित्य में युद्धों का सजीव वर्णन मिलता है लेकिन युद्ध के बाद जो दृश्य होता है, इसका कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता। इस समय का कवि राजदरबार तक ही सीमित था और इसका काम सिर्फ इतना रह गया था कि वह युद्ध में जाते हुए राजाओं का अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन करें, जबकि भक्तिकाल में अधिकतर रचनाएँ भक्ति को केन्द्र में रखकर की गयी।

भक्तिकाल में भक्ति का आवरण लेकर संतों ने अपने पदों, दोहों आदि से समाज सुधार का महान् संदेश आमजन में फैलाया। इसके लिए संतों–कवियों ने शास्त्रीय भाषा को छोड़कर के आम बोलचाल की भाषा को अपना माध्यम बनाया। इस तरह की भाषा को आ0 रामचन्द्र शुक्ल ने पंचमेल खिचड़ी भाषा कहा है। भक्तिकाल का कवि दरबार को छोड़कर आमजन के साथ खड़ा हुआ है, तथा अवसर आने पर राजा को सच्चाई कहने से नहीं चूकते। कुभंन दास को एक समय जब अकबर ने सीकरी आने का निमंत्रण दिया तो कुंभन दास ने कहा –

"संतन को कहाँ सीकरी सों काम।
आवत जात पहनिया टूटी बिसरि गयो हरिनाम।।

इन संतों को दरबार से कोई मतलब नहीं था।

भक्तिकालीन साहित्य में सर्वप्रथम शोषित, दलित की बात तत्कालीन संत कवियों ने अपनी रचनाओं में उठाई, साथ में समाज में फैली अनेक प्रकार की असमानता को भक्ति का आवरण लेकर दूर करने का प्रयास किया गया। ईश्वर के कई रूपों को याद करके, भक्तिकाल के कवियों ने सामाजिक सौहार्द का माहौल बनाया। कबीर दास ने जॉत–पॉत के विरोध को ही इस प्रकार बताया है–

"ऊंचे कुल का जनमियां करनी ऊंच न होय।
सुबरन कलस सुरा भरा साधू निन्दत सोय।"

कबीर दास ने हिन्दू–मुस्लिम एकता का समर्थन किया। पाण्डे–पुरोहित से भी वे शास्त्रार्थ करते हैं, वे सबसे पहले इन सब कर्मकाण्ड करने वालों को चुनौती देते हैं –

"माला फेरत जुग गया गया न मन का फेर।
करका मनका डारि कै मन का मनका फेर।।"

इन संत कवियों के साथ तुलसीदास ने भी अपने समय की सच्चाई को उजागर किया है। उनके समय में किसान, भिखारी, बनियां, नौकर सब लोग परेशान थे आमजन का जो हाल मध्यकाल में था उसको तुलसीदास ने इस प्रकार बताया है –

"खेती न किसान को भिखारी को न भीख भली,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहें एक एकन सौं कहां जाइ का करी।

रामराज्य के विषय में तुलसी दास कहते हैं –

"दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुंहि व्यापा।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहि स्वधर्म निरत श्रुति नीति।।

इन सब संत–भक्त कवियों के साथ मीराबाई ने भी भक्तिकाल में अपनी लोकलाज छोड़कर मध्य युगीन भक्ति आंदोलन में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। राणा सांगा के परिवार से अलग होकर साधु संतो के संग–संग रहना गैर मामूली बात थी। भक्तिकाल में मीराबाई ने सामंती सोच को तोड़ने का प्रयास किया है। राठौर वंश की मर्यादा को तोड़कर लोकलाज को छोड़कर मीरा ने कृष्ण भक्ति को अपनाया। मीराबाई सामन्ती अभिंजात्यता को एक झटके में तोड़ डालती है और कहती है –

'लोक लाज कुल की मरजाद यामें एक न राखूँगी।

इस तरह इन कवियों ने अपने समय में लोगों को सही रास्ता दिखाने का प्रयास किया। अपने पदों, दोहों और छंदों से तत्कालीन समाज की मानसिकता को बदलने का सार्थक प्रयास किया। कवि/लेखक अपने जीवन मे जो कुछ देखते हैं, जो कुछ हम पर गुजरती है वही अनुभव ओर वही चोटें कल्पना में पहुँचकर लेखक को साहित्य कर्म के लिए प्रेरित करती है। सच्चा साहित्यकार अपने अतीत से कुछ लेकर वर्तमान की बात करके हमें भविष्य के प्रति सचेत करता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि साहित्य का समाज निर्माण में बहुत बड़ा योगदान है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 भक्तिकाव्य और लोकजीवन : शिवकुमार मिश्र, ग्रंथशिल्पी।
2 भक्तिकाव्य का समाज शास्त्र : प्रेम शंकर, राधाकृष्ण प्रकाशन।
3 हिन्दी नाटक : उद्‌भव और विकास डा0 दशरथ ओझा, राजपाल एण्ड सन्स।
4 हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डा0 बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन।
5 साहित्य और संस्कृति : अमृतलाल नागर, राजपाल एण्ड सन्स।
6 प्रेमचंद के कुछ विचार : प्रेमचंद, हंस प्रकाशन।
7 कबीर : वासुदेव सिंह।
8 मीरा का काव्य : विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन।